

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ ध्यायेत् ॥ साकितोऽस्य दया न लभान्
नीलां हस्तं वरुणं मणिं रत्नं विभुं श्रीः ॥ अथ ध्यायेत् ॥ अथ ध्यायेत् ॥
नृदिनं नृणां नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ ध्यायेत् ॥ अथ ध्यायेत् ॥
वनादिगानि मधिवमात्रनिर्भकं सुयकुतान्य ॥ अथ ध्यायेत् ॥ अथ ध्यायेत् ॥
स्त्रिंशत् ॥ अथ ध्यायेत् ॥ अथ ध्यायेत् ॥ अथ ध्यायेत् ॥ अथ ध्यायेत् ॥
हस्तं पद्मं वा ॥ अथ ध्यायेत् ॥ अथ ध्यायेत् ॥ अथ ध्यायेत् ॥ अथ ध्यायेत् ॥
मातृनिदं लदीयं गजः पद्मं वरुणं कं कं मणं कं मणं ॥ अथ ध्यायेत् ॥ अथ ध्यायेत् ॥

मृगां शुक्लवातं, रूपप्रिकालमदिनं पत्रमा मृगा कं । **प्राज्ञीकृत**
उयसं पदेन महगाम मृगलसं दीपितं स्थायं यः पुनिवासं गवपनामा
अपन्मनुवितुं तस्य क्रीलितुं कृत्वा रुचन्निवसगमल श्रीचिन्मयिनीवा
लीनिर्मलसुकिरावहगिगा आगहि दीर्घयमः ४ **प्राज्ञीकृत**
नमो भगवते वासुदेवाय । नथ सुवंपुव कामि विप्रा लुव
समिगां, ५२ पगां दवद वगिरु किरु कन वगसा । किं किंदुः खंसक

लुननिनीयते नमृगायां, काका कीर्तिः ४ कलकमलिनिप्रायगना
विगायां । किं किं शीखां सजव नमिने प्रायते नमृगायां, कं कं थागं
ह्यिनिविनूतविरुमालमितायां ॥ १ ॥ ससंसर्गसं नमृगायां
अमविभुम विद्युदुम लुलाकुरु नमरुदुनवत्तुरु ॥ अगताज्ञा
दनाथागहागविन्यास आगिनि, हिनिलवकिने दवी नमः स्वन
चिर्यमिके ॥ २ ॥ लुवा लुवपृथगुलव, लुवा लुवदयकमलि ॥ वेगं न्य

यं यकदवि नमस्तु खं हर्ता गल ॥ ३ ॥ सुगारुवरुय धंसि पदमिला
सिं हर्तुं कर्त्री ॥ सुगान्वं वां क्ति तं दवि, ददासि क न नाक ने ॥ ४ ॥ प
नमानन्द वा क्षामि, नूप तेज ॥ सुवृत्तिलि ॥ दववृन्द नि ना नल निः
धृत्त न न लाम्बुज ॥ ५ ॥ विद्विभक्ति महास हा मा प्रमा प्रन मा मुगे ॥ सु
वि स्ति रूप सहा न हे तु रु त म ना ग नि ॥ ६ ॥ गु ल ग यामि क मि न्दं जग न
॥ का न ल क्पा ॥ न न ग हा य रू ता नां, सु ही ग दि य वि ग्र ह ॥ ७ ॥ रु क्तः

स्य भनि ल्य पजा, य क्त स्य प न्म ष्ण गी ॥ ने हि का मिं की मि हिं, दे हि गि द न
वै दि त ॥ ८ ॥ ता य प्र य प लि स्तान, लज नं वा हि मी नि वे ॥ ना न्यं व द्या मि
न ष्ट नो मि न वि क यामि ॥ ९ ॥ ना न्यं स त्र मि न रु द्रा मि न रा प्र यामि, य
क्ता ल दी य न त लाम्बु ज मा द त ल मां ग हि दे वि क य यामि दे हि मि
हिं ॥ १० ॥ न रू ना द्वा प्र मा द्वा वे क ल्या स्ता ध क स्य व, य न्न न म गि त्रि कं वा, न
सर्वं क्तु म हि सि ॥ द द्य ही नं क्रि या ही नं भ द्वा मं गु वि वर्जितं, त सर्वं क्त

या दवि, क्रमस्वर्गं दयानिष्ठे ॥१॥ यन्मया क्रियत कर्म तन्महत्स्वल्पम
वदा ॥ तत्सर्वं च जगत् किं कृतव्यस्य मर्मलिः ॥ अति किं किं लीला
समाप्तं ॥

प्रवृत्तं शुभं नमः श्रीगुरुगणसायः ॥ धी ३ प्रवृत्तं वृत्तिकथेनमः ॥

नाली शुद्धता जगत् अविलसत् वन्द्य कपूपात्र ही राख्य काल
त्रमलुलं तदुदय योनि च कर्म हृत् ॥ तन्मया विपति तमे धन

त्रतः प्रद्युम्न गल्फा मिना, पृथक् तन्मया क्काटिविलसलुजः
स्वयं योनि वां ॥ १ ॥ वामकिन्ना जिना क्षत्रां गदिन त्रयानो महत्
हृत् कां प्रयाली रूपदां दिगन्तस्य नाम्ना क्कसे वजां ॥ किन्ना
लीपजिनाः समस्त दमृग्य त्रिपिक्कां पनां, वालादित्य समप्रका
अविलसन्त गुण्यो लासिनी ॥ २ ॥ वामादय यनालं वदु वरुलग
लद्रक वी नारि त्रिः पायनी मस्ति रूपां कलमलसलसल ॥ ६

कामग्रन्थपां॥ नकामात्रक कभीमपगत नयनां वल्लुनीमात्मन
किं पत्यो लिखपपादामत्र निनयनां थागिनीथागनिदां॥ ३॥ दिग्व
त्तांमककभीं प्रलयघनघटांघात्र नृपां पर्वत्तां दंष्ट्रा दंष्ट्रा व
कादत्र विलसत्तां लज्जितां गुणसां॥ विद्युत्तालाक्रियर्माददय
नठसंज्ञागतीमां शुभ्रं सूर्यं सूर्याग्निनात्मकं प्रगलितं विनेताः
किनीं वदयिनीं॥ ४॥ वक्रं भनयन्तः शिखरं विनिहितांश्च

दपादात्र विन्देत्तात्मकं योगिभूयः प्रतियदमनिर्भावितामिषि
न्यत्रूपां॥ संज्ञानेसात्र रूपां विद्रुवनं जननीं चिन्मसमां पुनस्त
मिषाकामिषदायीं कलिकलखरुनां च तसां विनयामि॥ ५॥
उत्पलितेति संज्ञा तीर्थं यिदं धरुति नृपां तनं गीतं आकृगता
यदिपविकृतिवृक्षा यतः॥ लहृ॥ नामाद्यां प्रवृत्तिं स्मृतमि
मनसा सर्वार्थसंसिद्धये यस्याः स्मृतपदात्र विन्देत्तागलं लहृ

३ श्री ३ म मा हा मा पा धा ३ श्री
ह पा धा मा पा धा ३ श्री

क र म नाः ॥ ६ ॥ न लि पि सि त प त्रं धी था ग य डा प त्रा हं व द्वा वि ध डा
न रा वा त्र क स म्मा वि गा हं ॥ प षु ड न वि न गा हं रे त वी स कि गा हं ॥ ७ ॥
त्र च त नै प त्रा हं रे त वा हं नि वा हं ॥ १० ॥ ६० दं स्ता र म हा यु र्ध
व क्त नी रा जि र्ग प त्रा स र्व सि हि प्र दं सा का त्म हा पा त क ना ज न
॥ ८ ॥ प ॥ १० तु न न र्मा य ड या ॥ स नि हि ना पि या ॥ त स्य सि हि रु वे दे वि
र्या क्रि गा थ पु द्वा चि न् ॥ ध नं धा न्यं मृ ग डा रा ह रा ह न भ व र ॥

॥ १५ म म म ॥
॥ ३ म न मा हा मा पा धा ३ श्री ३ म मा हा
पा धा मा पा धा ३ श्री ३ म मा हा

३ श्री ३ म मा हा मा पा धा ३ श्री
ह पा धा मा पा धा ३ श्री

व स र्व न म हा पि द्या म ष्टा सि हि रु वे द्कु र्वा ॥ वे पा द्या जि न री जि न री जि
त स द न न म प्र ल म्बा द त् र य द्वा नी र्व च नी य प व स र ल म ल्भु व
ली म ल्भु त ॥ क री क च त् र वि वि रि ष च त्रि गा र्हा न द व न प दं
मा त र् क डा ना न क लि नि म हा मा य म्बु तु र्थ न मः ॥ ११ ॥
॥ १२ ॥ न क र्पु व तु द्वा सि ॥ न नि व न गा ॥ १३ ॥
३ श्री ३ म मा हा मा पा धा ३ श्री ३ म मा हा मा पा धा ३ श्री ३ म मा हा मा पा धा ३ श्री
ह पा धा मा पा धा ३ श्री ३ म मा हा मा पा धा ३ श्री ३ म मा हा मा पा धा ३ श्री
मा पा धा ३ श्री ३ म मा हा मा पा धा ३ श्री ३ म मा हा मा पा धा ३ श्री

॥ ३ म म म ॥
॥ ३ म न मा हा मा पा धा ३ श्री ३ म मा हा
पा धा मा पा धा ३ श्री ३ म मा हा

दया २ म २

नूतन २

ग्रीष्म ऋतु

दौप नमपं नयामा मयामायाम् नी कं वी समर्क क्रि विज ल मं न
 वायम भाविर्भ ॥ समर्क लाद नर्क वि कुवन सहि न व द्वा वि वि न
 डा के गु ला जा न म र्मा नू क ल क लग न पा तु द न द्वा कि ॥ १ ॥
 नू क नी ला न ह व तु न तु ज ध रं य द फ न द्रा क वा भ वि नु पा ग म
 व द र्द र्द ग कि के ले ग र्म नू क हा स क द म् ॥ न का स या य वि र्भ वि नु व

न उ न नी वे न म या स न र्मा न स र्मा पी ० म ल द रि ह न वि दि ता पा तु मी व
 मू ग कि ॥ १ ॥ क र्थ वा ना व नी वे व म र्मा नू ग म ल व न व लू वि न र्मा
 म्मा नू ना वि दि र्मा नू म स न क द प न वे न म र्मा ल र्मा ॥ सो नि ना ज न म
 म्मा व न न तु ज ध रं पी ० माल क र्मा नू न ह मी वा य वि र्भ त द्वा वि
 वि र्मा ल र्मा हे न र्मा म नू गी ॥ १ ॥ म र्मा म र्मा म र्मा म र्मा म र्मा म र्मा म र्मा
 लु काल व द के वा म र्मा कि स वि नू न न र्मा म नी उ र्द माला स न र्मा
 ॥ को व र्दि र्मा म र्मा म र्मा वि नु व न न मि म र्मा म र्मा ० व द र्मा को वा नी वा य वि

रया ३ ला

नूची २

गि ३

इति दुर्गित रुय ह नो पा हु मां वृक्ष ग किः

॥ ॥ ~~ना का स व नू दे हो व न प ति न य नो प्री~~

प्र न म्मा रु द की ना हि न के दि गा ते कू ठि ला अ ह न ना ग द हा ॥ ३५ ॥
रौ का म नू पा दि प थ ग मि य म न च विली ना सा स आ स नू न म म
न रु द ग ना पा हु मां वि षु ग किः ॥ ॥ ना का स व नू दे हा ना हि अ नि ग म
ना स रु को न ग दा ध क को वि नु य क व कं ष ॥ कि क ल स ना स रु ने स रु
यो ॥ ॥ सो म व नू य के ह न ग ति न य न न रु हा स रु द म् वि षु व या प

स वा य प्र न म्मा रु द की ना हि न के दि गा ते कू ठि ला अ ह न ना ग द हा ॥ ३५ ॥
न रु द ग ना पा हु मां वि षु ग किः ॥ ॥ ना का स व नू दे हो व न प ति न य नो प्री
ना का स व नू दे हो व न प ति न य नो प्री
कि त्रे व र त ल पु म् मि न क म नू ना न रु ग कि र उ ॥ ॥ ना हि अ नि ग म
वि न्दे न ति स रु ग न ल ना ल रु क दे सा डि उ न म्मा ना ल सी वि षु स न रु द
न का म ना म्मा रु द रु ॥ सो दि न्मा रु न म्मा ना वि नि न य न ध री स वि षु ही ना
प्र न म्मा रु द की ना हि न के दि गा ते कू ठि ला अ ह न ना ग द हा ॥ ३५ ॥

१२७ विष्णु जीकोटी

कमला

॥ दवा मे होठ माला मनिग लखविना किं किनि कोमाला यहु सांभो
षिता न्ये प्रमदित वहुना सिद्धि मागा सुलक्ष्मीः ॥ कोमाली बाल रूप दि
कनकन कयाच कवर्ण रान का सिद्धु प्रकवधुः कनकमनिम या
रुद्धि गाला उमाला ॥ विष्णु मां कर्म दाता वन दवत त तो रूणि हस्त निमा
हं गां यत् किं किनाय कमल वल मता धर्मा नाशाय का ॥ १२७ ॥ सोन्या
सुखि ना पावन दवत कना रूणि ना प्राप्ति यका सूर्या दा होठ माला विष्णु

ASHA ARCHIVES 3331

वरुणखिलं ॥ १॥ यस्यां प्रलीयते वा न यस्यां वजायते पुनः ॥ याः
समाना ध्वजे लोकं स प्रपद्ये दमरुम ॥ २० ॥ तस्या नाम सहस्रकु
धसामिष्टलक्षणम् ॥ ॥ ॐ अस्य श्रीमहाप्रियतसूदनी मनुसहस्रना
मस्तु यस्य श्रीरुगवाचिना नृदिवा मदेवमधिर्गय श्रीकृदः सम
रूपकठउफाननसं ७ दायकल कोलाहीर्गार्हत्रहस्यागिति
सुप्रहवाप्रियतसूदनी देवता नो जा भवी जं माया न किः कामनी

जं कीलकं जीववीजं सुवन्माना जीसत्रस्वर्गि न किधर्माथ कामभा कथं
रूपविनिर्माणः ॥ ॥ अथ ध्यानं ॥ आक्षत्रात्तुल्यकविन्दमहर्षिहमप्र
हं वाग्ववीजं मन्त्रमिन्द्रा पसरं विदुर्त्यं कुरु संस्मृतं ॥ रक्तकाल
मयं गन्धं कुरु विरवीजं रत्नार्हियं यथा यन्निपदं यन्तदनिव
तयानि ॥ ॥ १ ॥ ॥ ॐ कल्याणी कमला काली कपाली कामर
पिली ॥ नमो नमो कामका काम्या कामिनी कामयानिनी ॥ १ ॥ कालना

विमलनात्रिः कामनी कामनूपली ॥ को नीकरूपकीरिः कलिक
 लयनामिनी ॥ २ ॥ पायनी कलावना को दीकमलप्रिया ॥ कीरिदा
 वृद्धिदामधन ॥ नीतिवत्सला ॥ ३ ॥ महेश्वरी महामाया महामाया
 महेश्वरी ॥ महाजिह्वा महालाभा महादक्षामहाशुभा ॥ ४ ॥ महामायाः
 त्रिनीध्री महामाया प्रदायिनी ॥ महादात्रिदत्रानि ॥ श्री महागङ्गा विमर्दि
 नी ॥ ५ ॥ महाशक्तिर्महागङ्गा महामाया विनामिनी ॥ महामाया महवीर्या ॥ ६ ॥
 महापातकनामिनी ॥ ७ ॥ महामाया मनुमयी मलिपूतनिवासिनी ॥ मान

सीमानामाया मानवक्रान्तमवता ॥ ८ ॥ गङ्गा माया वगयत्री गङ्गा भव
 विना ॥ गिरीशानिभसाध्वी गिरीशानिभसाध्वी ॥ ९ ॥ वल्लभगीतल
 यत्र प्रवृत्तयल्लु मालिनी ॥ चरित्रावर्तिनकत्रा वल्लुकावन्तदपिनी ॥
 १० ॥ यक्षेश्वरी यक्षरूपा उपयक्षपत्रायला ॥ यक्षमाता यक्षलक्ष्मी यक्ष
 यक्षसंख्या ॥ ११ ॥ भिद्ययक्षकेयासिद्धि ॥ गङ्गीयक्षत्रिका ॥ यक्षप्रिया
 यक्षरूपा यक्षाय विद्यागया ॥ १२ ॥ जालेश्वरी जगन्माता जगन्वैद्या
 जगन्प्रिया ॥ जित्तिल्या जित्तिल्या जगन्वैद्या ॥ १३ ॥ गङ्गा माया

* १ मातर्द्वि नमस्तु वस्तु
१ महानि वनदं विपुत्रमान
१ ओ मा तिसर्ध्वि धल कान
१ विष्णु च पधने ववि विन
१ वासा हि वनदं ववि दुष्ट
१ म कु च पधने ववि न क
१ वासु लु म ल माला ह क
१ महाला म म हा ला ह
यि च्छं म म नु सि दि नु
मे ते मा ए म र्द्वि वि मि
विष्णु दं वि विष्णु च प न
मु क म्मी न ए च्छं य म
वि च्छं न गाय म ॥

लन विष्णो १
१ धन न ध द प य म म नु
१ द र्द्वि मि ॥ क प सा ह न वि
१ दी ठ ने व न ॥ क प य ॥
१ वा सा हि मि ॥ क
१ च्छं च म ॥ क
१ न य द्दि ने ॥ क
१ वि वि च्छं न गि नि
१ म न्मा प ना मि नि ॥ द्ध व र
१ म ॥
१ ए व दि १ क गे ॥ नु के द
१ म नु गे ॥ न न स्मा गु प ॥
१ वि व ग्ध म द्वा १ स मा मि क गे

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

६ ३ श्रीः वीरमदा श्री

वा ३ ॐ श्रीसिद्धि श्री

३ ॐ श्रीमदभनायनमः

ॐ

सर्वसिद्धिप्रदाय चक्रं वा
अथाप्यपामद्वयविरुद्धि
तत्तत्ताले निरुगन्धिवक्र
नायिकाप्रसिद्धिगः नृणां
मन्थयन्त्या भूतिगहस्य
योगिन्यः समुद्राः सन्वा-
साः सुः सन्पः शक्तिग
तप्यितासिद्धिः ।

ॐ श्रीमद्भुवनेश्वर

गुणस्य दद्या

ॐ नमो भगवते

३ श्रीमहागिपनसुन्दरीसिद्धि

ॐ श्रीमहागिपन

ॐ

३ सर्वनन्दमयदेवदवका
यनमः

३ श्रीमहागिपनसुन्दरीसुन्दरी

नायिका श्री

३ नृणां नमो भगवते

वा ३ प्राप्ति सिद्धि श्री

३ भाद्र श्री

ॐ नमो भगवते

ॐ श्रीमहागिपनसुन्दरीसुन्दरी

ॐ नमो भगवते

ॐ नमो भगवते

ॐ नमो भगवते

ॐ नमो भगवते

ॐ नमो भगवते

श्री कान्तवाअ ६७ गता दामा

दोष्टी हो कुं सुः कामधन का
द्रो ग वं सर्व भात नाय कामधन
द्रो ग शो द्रो व भी कत नाय कामधन
द्रो सर्व सुम्सन कताय कामधन

खिका नाए

ने ब्रह्मि च कु कामगिर्या ले
सभक्ति कामधन द

हो सु र्या च कु जालं धन

विष्णु सभक्ति कामधन

सोः सोम च कु पी १० ३

सभक्ति एग मासि नो दे

वक्राणि सर्व सिद्धि पुदा प्र

वक्राणि कु ८ विप गानि त्या

य लेन धर्मि यमा दि द्रो ओ

मध्वती करु नवा ल त्या नमः

मध्वती करु नवा ल त्या नमः

मध्वती करु नवा ल त्या नमः

मध्वती करु नवा ल त्या नमः

स भिगी भना धर्मि क नंदा

विष्णु पा

पी १० सखी भना धर्मि क

ती दधी नि त्या गी

जी या भना धर्मि क वक्रा

वी नि त्या गी

स वक्रा य नमः